समस्याएं हल करने की क्षमता के आधार पर छोटी और बड़ी होती है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह देहरादून मंगलवार 16 जून 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

उम्मीद किसी को नहीं

ऐसे में भारत और चीन के बीच सीमा के हर विवादित बिंदु को सही ढंग से परिभाषित करने और उस पर दोनों पक्षों में सहमति बनाने की आवश्यकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। हालांकि दो देशों के बीच अंतिम रूप से सीमा निर्धारण दुनिया के कठिनतम कामों में से एक है।

नवीन शाह।

पिछले कुछ दिनों से भारत–चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चल रहे तनाव के बीच शनिवार को दोनों देशों में हुई लेफ्टिनेंट जनरल स्तर की बातचीत को लंबी चलने वाली प्रक्रिया के एक हिस्से के ही रूप में लिया जा रहा है। यह अच्छी बात है कि बातचीत सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई और दोनों पक्षों ने अपनी अपेक्षाएं एक–दूसरे को बता दीं। बातचीत से तत्काल कोई नतीजा निकल आने की उम्मीद किसी को नहीं थी।

चीनी सेना ने जिस तरह अप्रैल तक की अपनी स्थिति से आगे बढ़कर न केवल आगे की जगहों पर डेरा डाल लिया बल्कि बड़ी संख्या में सैनिकों की तैनाती के जरिए वहीं टिके रहने का इरादा भी जाहिर कर दिया, उसकी अनदेखी करना भारत के लिए किसी भी सूरत में संभव नहीं है।

सीमा क्षेत्रों में सड़क निर्माण को लेकर चीन की भारत से जो भी शिकायतें हों, पर एक बात तो तय है कि ये गतिविधियां पूरी तरह से भारतीय दायरे में चल रही हैं। चीन का तो यह आरोप भी नहीं है कि भारत उसके सीमा क्षेत्र में या विवादित इलाकों में आकर कुछ कर रहा है। ऐसे में इसका कोई औचित्य नहीं बनता कि आपसी समझदारी से बनी यथास्थिति को भंग करते हुए उसकी सेना अचानक नए इलाकों पर कब्जा कर ले।

बहरहाल, ध्यान रखने वाली बात यह है कि उत्तर में हिमालय को प्राकृतिक सीमा मानने की पारंपरिक सोच अब अप्रासंगिक हो चुकी है। तकनीकी विकास की मौजूदा अवस्था में दुर्गमता अपना अर्थ खो चुकी है। जो क्षेत्र कल तक टट्टू की सवारी करने लायक भी नहीं माने जाते थे, उनमें आज धड़ल्ले से न केवल सड़कें बन रही हैं बल्कि रेल लाइनें बिछाई जा रही हैं। ऐसे में भारत और चीन के बीच सीमा के हर विवादित बिंदु को सही ढंग से परिभाषित करने और उस पर दोनों पक्षों में सहमति बनाने की आवश्यकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। हालांकि दो देशों के बीच अंतिम रूप से सीमा निर्धारण दुनिया के कठिनतम कामों में से एक है। इस दिशा में कोई भी प्रगति लंबे और लगातार चलने वाले संवाद के जरिए ही हासिल की जा सकती है।

दिक्कत यह है कि जब तक भारत और चीन की सीमाएं तय नहीं होतीं, तब तक दोनों देशों के रिश्तों में तनाव भरने वाले नए–नए विवाद खड़े होते रहेंगे। विवादों के यही पल दोनों प्राचीन देशों के नेतृत्व की समझदारी और कूटनीतिक कौशल की परीक्षा लेते हैं, लेकिन भारत के लिए अभी यह दोहरी परीक्षा है। उसे अपनी सीमाओं के भीतर कुछ भी करने की आजादी बरकरार रखनी है, साथ ही चीनी नेतृत्व को अप्रैल से पहले वाली जगह पर जाकर यथास्थिति बहाल करने के लिए मनाना भी है। चीन का रुख अभी नियंत्रण रेखा के पास ही युद्धाभ्यास करके भारत पर दबाव बनाने का है, जबकि हमारी कूटनीति की सफलता उसे यह अहसास कराने में है कि यह रवैया उसे व्यापारिक और अन्य स्तरों पर कितना नुकसान पहुंचा सकता है। ऑर्डिनेंस लागू होने के बाद भी सरकार को अपनी तरफ से किसान हितों की सुरक्षा के बंदोबस्त करने ही होंगे।

कामनाओं में उलझता

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। b l ku उन–उन भोगों की कामनाओं से जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे अपने स्वभाव से प्रेरित होकर उस–उस नियम का पालन करते हुए अन्य देवताओं को पूजते हैं। जब बार–बार भोग को पाने की कामनाओं में इंसान लगा रहता है, तब उसकी आध्यात्मिक ऊर्जा बाहर बहने लगती है, क्योंकि भोग ऊर्जा को बहाने की प्रक्रिया है जिसके परिणाम स्वरुप व्यक्ति के अंदर, जो अपने स्वरुप का ज्ञान होता है वह भी नष्ट हो जाता है। फिर बार–बार अनेक भोगों की कामनाओं में इंसान उलझ जाता है, फिर चाह कर भी वह अध्यात्म में टिक नहीं पाता है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव केवल भोगों को भोगने और उनको पाने में ही लगा रहता है, जिसकी वजह से वो अन्य नियमों का पालन करने लगता है।

संपादकीय

आएं देसी कंपनियां

करीब 45 साल पुराने हो चुके इंटरनेट और 30 साल के हो चुके वर्ल्ड वाइड वेब से जुड़ी सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में अभी भी बहुत कुछ नया करने की गुंजाइश बची है। इसके लिए जरूरी नहीं कि हम गूगल, ट्विटर, वॉट्सऐप के देसी संस्करण बनाने में ही अपनी ऊर्जा खपाएं। हम बहुत कुछ नया और अनोखा सोच सकते हैं। इसके लिए सरकार का मुंह ताकते रहना हमारी बदकिस्मती होगा क्योंकि सरकार की सरपरस्ती में चलने वाली परियोजनाएं सरकारी चाल से ही आगे बढ़ती हैं और अंततः जनता से वसूले गए टैक्स की बर्बादी पर आकर खत्म होती हैं। सरकार के बजाय यह काम टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, टेक महिंद्रा जैसी बड़ी कंपनियां आराम से कर सकती हैं, बशर्ते उनकी नजर इस तरफ जाए और इनोवेशन में शुरुआती खर्च की फिक्र छोड़कर वे भारतीय आईटी प्रतिभाओं का उसी तरह बेहतरीन इस्तेमाल करें, जिस तरह गूगल, फेसबुक आदि ने किया है। यह कहना निरर्थक है कि सॉफ्टवेयर में इनोवेशन की कोई हद हो सकती है। मोदी से पहले कांग्रेस सरकारों के वक्त में भी कहा जाता रहा है कि भारत अगर गूगल जैसा देसी सर्च इंजन बना ले, जिसका सर्वर देश की सीमाओं में ही हो, तो डेटा चोरी से लेकर फेक न्यूज और अश्लील–आपत्तिजनक सामग्रियों के प्रसार तक तमाम समस्याओं पर आसानी से रोक लग सकती है और उनकी निगरानी हो सकती है। इधर देश में ऐसी ही एक बात देसी वॉट्सऐप बनाने की भी उठी है। यही नहीं, देश में माइक्रोसॉफ्ट विंडोज जैसा ऑपरेटिंग सिस्टम विकसित करने की भी गाहे–बगाहे चर्चा होती रहती है क्योंकि हरेक कंप्यूटर–लैपटॉप में मौजूद रहने वाले इस एक सॉफ्टवेयर की बदौलत माइक्रोसॉफ्ट कंपनी सालाना अरबों डॉलर की फीस हमसे वसूलती है।

इसका अंदाजा हाल में एक ऐप 'मितरों' की तारीफों के पुल बांधने की कोशिशों से लग जाता है। टिकटॉक का देसी विकल्प कहे जा रहे इस ऐप का विकास कथित तौर पर आईआईटी रुड़की से निकले छात्रों ने किया है।

किनारे पड़ा मित्रों

संजय वर्मा।

ज्यादा समय नहीं हुआ जब आईटी और बीपीओ के क्षेत्र में भारतीय मेधा के कसीदे पढ़े जाते थे। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के प्रत्याशी अपनी चुनावी सभाओं में बोलते थे कि सूचना प्रौद्योगिकी में स्किल्ड और मेहनती भारतीय युवाओं को टक्कर देना आसान नहीं। इससे उम्मीद जगी थी कि हमारा देश इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर साइंस से जुड़े मैन्यूफैक्चरिंग कामकाज यानी मोबाइल हैंडसेट, कंप्यूटर, लैपटॉप, सुपर कंप्यूटर आदि बनाने में भले कोई उल्लेखनीय बढ़त हासिल न कर सके, लेकिन सॉफ्टवेयर में हमें ग्लोबल लीडर बनने से कोई नहीं रोक सकता। अफसोस कि अभी तक की उपलब्धियों को देखकर हम यही कह पा रहे हैं कि हम आईटी–दासों की फौज तो हर साल सप्लाई कर सकते हैं, पर कायदे का कोई सॉफ्टवेयर अथवा ऐप आदि बनाना हमारे वश की बात नहीं।

हालात कैसे हैं इसका अंदाजा हाल में एक ऐप 'मितरों' की तारीफों के पुल बांधने की कोशिशों से लग जाता है। टिकटॉक का देसी विकल्प कहे जा रहे इस ऐप का विकास कथित तौर पर आईआईटी रुड़की से निकले छात्रों ने किया है। बताया गया कि इसे 50 लाख स्मार्टफोन्स पर डाउनलोड किया जा चुका है। पिछले दिनों एक

ऑनलाइन स्पीच में इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने भी इस ऐप की जमकर तारीफ की और दावा किया कि कोविड–19 के दौर में हुए इस इनोवेशन से देश को बहुत बड़ा संबल मिला है। मंत्री महोदय की बात का आशय यह है कि पीएम मोदी ने बीते दिनों आत्मनिर्भरता पैकेज का ऐलान करते हुए लोकल के साथ वोकल और फिर ग्लोबल होने का जो आह्वान किया है, मित्रों' ऐप उस शुरुआत की पहली कड़ी है।

अच्छा होता कि यह ऐप हकीकत में एक लोकल प्रॉडक्ट होता और इसके बारे में बढ़–चढ़कर किए जाने वाले बखानों (वोकलत्व) से इसे ग्लोबल होने का मौका मिलता। टिकटॉक की तरह ही यह भी दुनिया के सिर पर चढ़कर हमारी कामयाबी की कहानी कहता। लेकिन टिकटॉक जैसे इस मोबाइल ऐप्लिकेशन की कलई शुरुआत में ही खुल गई है। चीनी टिकटॉक के मुकाबले में आए विडियो मेकिंग और शेयरिंग के ऐप 'मितरों' के निर्माण के पीछे एक पाकिस्तानी कंपनी क्यूबॉक्सस के ऐप टिकटिक का नाम लिया जा रहा है। दावा है कि टिकटिक और मित्रों के सोर्स कोड एक जैसे हैं और यह पाकिस्तानी ऐप की रीब्रैंडिंग और रीपैकेजिंग से ज्यादा कुछ नहीं है।

दूरसंचार मंत्री मित्रों को खालिस हिंदुस्तानी ऐप बताकर शायद पाकिस्तानी ऐप से उसकी समानताओं को खारिज करना चाहते हैं, लेकिन मित्रों और टिकटिक की सुरक्षा में मौजूद एक जैसी खामियां इस मामले में तस्वीर को काफी हद तक साफ कर देती हैं। एक बार मान भी लें कि टिकटॉक के पाकिस्तानी वर्जन टिकटिक से मित्रों ऐप का कोई लेना–देना नहीं है, तो भी इसमें मौलिकता कहां है? इसे चीनी टिकटॉक की शानदार कॉपी कहने से अगर हमारी शान में चार चांद लगते हैं, तो इस मानसिक दिवालियेपन के बारे में आखिर क्या कहा जाए।

सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री अगर नकलों के बल पर चल रही होती तो फेसबुक, ट्विटर, वॉट्सऐप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि का हमारे मुल्क में कोई नाम लेवा–पानी देवा न होता और हमने इनके शानदार विकल्प तैयार कर लिए होते।

अष्टयोग-5081

	6			2	3	4
2	39	1	29		26	
7		5	4			1
	30	2	27	1	31	
		3			6	7
6	30		39	4	35	
3	5		6		1	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5080 का हल

7	6	5	4	3	2	1
2	35	1	26	6	28	6
5	7	2	4	1	6	3
4	28	4	27	4	36	4
1	2	3	4	5	6	7
6	35	7	35	7	38	2
3	7	6	1	2	4	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग
अर्थव्यवस्था की होड़ में मौजूद

मोहन। फिर भी अगर मकसद नकलों के बल पर देसी सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री को सिरे चढ़ाने का हो, तो यह काम चीन की तरह अपने यहां गूगल, फेसबुक का संचालन रोककर उनके बेजोड़–बेहतर हिंदुस्तानी विकल्प देकर हो सकता था। लेकिन ऐसा करके भी सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री को नाम–दाम नहीं मिलते। यही वजह है कि कमाई और नॉलेज आधारित अर्थव्यवस्था की होड़ में मौजूद रहकर आगे निकलने के लिए चीन में टिकटॉक जैसा बेजोड़ ऐप बना, जिसकी आज दुनिया मुरीद हुई पड़ी है। यह समझने की जरूरत है कि दूसरे तमाम काम–धंधों की तरह आईटी में भी लकीर पीटने और लीक से हटकर काम करने में बेसिक फर्क है। आईटी में बनी–बनाई परिपाटियों की बदौलत मिलने वाले कामकाज की एक सीमा होती है। इसमें दुनिया को कोई टक्कर देनी है तो या तो हार्डवेयर की वैसी ही धुरी बनने की कोशिश की जाएं जैसी फिलवक्त चीन है या फिर सॉफ्टवेयर में नई जमीनें तोड़ी जाएं।